National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 68-70

महिला शक्ति : महिला हिन्दी लेखन

डॉ. नरेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), एनीबिसेण्ट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सलारपुर, कोटकासिम, तिजारा, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

महिला शक्ति की अवधारणा पुरूष महिला की समानता के सिद्धान्त पर आधारित है। परन्तु समाज में महिलाओं का स्तर हमेशा पुरूष की अपेक्षा कम रहा है। उनकी शारीरिक और बौद्धिक क्षमता पर हमेशा उँगली उठायी जाती रही है, उन्हें घरेलू कार्यो के लिए योग्य तो माना गया लेकिन घर से बाहर के कार्यो के लिए पुरूष की अपेक्षा कमतर आंका गया है। परन्तु पाश्चात्य सभ्यता, वैज्ञानिक खोजों लोकतांत्रिक प्रणाली और सबसे बढ़कर मानवतावादी सिद्धान्तों के चलते आज महिला पुरूष के समकक्ष खड़ी हो गयी है। उसने विकास के हर मोर्चे पर पुरूष से समानता हासिल करने की सौगन्ध खा ली है। हमारे संविधान में भी महिलाओं को समानता का दर्जा देकर, सरकार हर तरह के लिंग भेद समाप्त करने को वचनबद्ध है। मेरा लेख महिला शक्ति की ही एक कड़ी महिला शक्ति : महिला हिन्दी लेखन पर आधारित है। मैंने महिलाओं के उस बौद्धिक स्तर का परीक्षण किया जिसके अन्तर्गत उन्होंने साहित्य की रचना की और महिला शक्ति का परिचय दिया। महिला देश और समाज के बारे में क्या सोच रखती है जिससे वह अपने साहित्य के दर्पण में देश और समाज का यथार्थ चित्रण कर सकी, क्या उसे इस कार्य के लिए सामाजिक विसंगतियों की प्रताड़ना भी झेलनी पड़ी। हालांकि हमारा महिलाओं के प्रति प्राचीन आदर्श बहुत ऊँचा रहा है। हमारे यहाँ नारियों की पूजा की गई है :–

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, तत्र बसंते देवता।

पहला नाम मीराबाई का है जिन्होंने मध्यकालीन महिला उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज उठाई और संत संगति में समानता का दर्जा हासिल किया। मीराबाई का सम्बन्ध उच्च कुल के राजघराने से था जहाँ विधवा होने के बाद स्त्री को पति के साथ सती होना पड़ता है या फिर आजीवन वैधव्य जीवन जीना पड़ता है। मीराबाई ने स्वतंत्रता और समानता का सिद्धान्त स्वीकार किया और क्षत्रिय समाज से सविनय विद्रोह कर दिया। उन्होंने कृष्ण को प्रतीक स्वरूप अपना पति स्वीकार किया, उनकी भक्ति में रमकर वह संत समाज का हिस्सा बन गई। मीरा लेखन भक्ति रूप में है लेकिन मध्यकालीन नारी विवशता को दर्शाता है :–

हे री मैं तो प्रेम दिवाणी, मेरा दर्द न जाने कोय।
राणा भेज्या विष का प्याला ...
मेरो तो गिरधर गोपाल ...

दूसरा नाम महादेवी वर्मा का है इनकी कृति 'यामा' के लिए इन्हें साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरूस्कार से पुरूस्कृत किया गया। इनका साहित्य वेदना और करूणा से सम्प्रक्त है इन्हें 'आधुनिक काल की मीरा' कहा जाता है। छायावाद की प्रमुख हस्ताक्षर होकर इन्होंने अज्ञात प्रियतम के प्रति जो विरह वेदना प्रकट की है उसमें रहस्यवाद की प्रमुखता है। उन्होंने नारी की पीड़ा को 'नीर भरी बदली' के रूप में प्रस्तुत किया है :

मैं नीर भरी दुख की बदली,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

महादेवी जी के अनुसार

दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधकर रखने की क्षमता रखता है। इसी कारण उनके साहित्य में प्रेम वेदना की गहनता, करूणा की प्रधानता और नारी सुलभ सात्विकता की अधिकता है इनके लिखे गये प्रणय गीत उनकी वेदना और पीड़ा का आधार है :–

तुमको पीड़ा में ढूंढा, अब तुममें ढूंढंगी पीड़ा।

यह पीड़ा एक तरफ सामाजिक बंधनों से उपतजी है तो दूसरी तरफ इसका अवसान आध्यात्मिक आकाश में करती है :

वीन भी मैं हूँ, तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
दूर हूँ तुमसे, अखण्ड सुहागिनी भी हूँ।।

सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रवादी चेतना से कौन परिचित नहीं है। एक नारी कवयित्री ने एक नारी पात्र को आधार बनाकर राष्ट्रीय चेतना का आह्वान किया और देशभक्त वीरों में स्वतंत्रता का बिगुल फूंक दिया। झांसी की रानी कविता इनकी बहुत प्रसिद्ध हुई :–

बुन्देले हर बोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह, तो झांसी वाली रानी थी।।

असहयोग आन्दोलन में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया और जेल गई। काव्य रचना विद्यार्थी जीवन से ही करने लगी थी। त्रिधारा और मुकुल इनके काव्य संग्रह है। राष्ट्रप्रेम के अलावा इन्होंने पारिवारिक और वात्सत्य भाव की सहज और मार्मिक अभिव्यक्ति वाली कविताओं की भी रचना की।

स्वतंत्रता के बाद लेखन कार्य में महिलाओं की संख्या तीव्रगति से बढ़ी। महिलाओं को अपनी शक्ति का आभास हो चला था। अब महिलाओं का भविष्य निर्माण पुरूष नहीं, बल्कि वह स्वयं करेग। शिक्षा का प्रसार, बेरोजगारी में वृद्धि, मानवतावादी आन्दोलन, महिला आरक्षण और प्रधानमंत्री के रूप में इन्दिरा गांधी का अभ्युदय आदि कारकों ने महिलाओं में शक्ति का संचार हुआ। आठवें दशक से महिला लेखन में इजाफा हुआ।

मनु भण्डारी द्वारा बालक की जिन्दगी पर लिखा गया हिन्दी का सबसे सफल उपन्यास 'आपका बंटी' है। इसकी कथा संक्षिप्त है शिक्षित माँ–बा पके अहं के टकराव से तनाव और फिर सम्बन्ध विच्छेद। बंटी को स्थितियों में पिसते जाना और अकेले पड़ जाना फिर उसे हॉस्टल में एडमीशन दिलाना पड़ता है। एक और उपन्यास 'महाभोज' है जिसमें

राजनैतिक उपन्यास का नाटकीय रूपान्तरण भी महाभोज के नाम से किया गया है।

कृष्णा सोबती ने डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, सूरजमुखी अंधेरे के, जिन्दगीनामा, और दिलों दानिश उपन्यासों की रचना की। उन्होंने जीवन के यथार्थ को पंजाब की मिट्टी से जोड़ते हुए नारी स्वाधीनता और नारी मुक्ति के सवालों को उठाया है। 'सूरजमुखी अंधेरे के ' की रत्ती अपने बचपन में हुए अत्याचारों को ही अपने परिवर्ती विचलन का मुख्य कारण मानती है। देह के प्रति बरती गई क्रूरता ने ही उसे देह के प्रति उदासीन बना दिया है, लेकिन दिवाकर का सम्मान पाकर वह खिल उठती है। जिन्दगीनामा में विभाजन पूर्व में पंजाब की हिन्दू–मुस्लिमों की साझा संस्कृति के साथ ही सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को बहुत ही प्रामाणिक रूप में अंकित किया गया है। दिलों दानिश दिल्ली की पृष्ठभूमि ने लिखा गया है।

कांकरिया बंगाली हस्ताक्षर हैं। इनकी प्रमुख रचनायें पत्ताखोर (उपन्यास), सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु (कहानी संग्रह) इन्होंने कई सुन्दर यात्रा वृतान्त भी लिखे हैं। इनके लेखन में विचार और संवेदना की नवीनता देखने को मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलन्त समस्यायें जैसे अपसंस्कृति, महानगर की घुटन और युवकों में बढ़ती नशे की आदत, लाल बत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

गौरापन्त शिवानी हिन्दी की लोकप्रिय कथा लेखिका है। गुजरात की जन्मी शिवानी की शिक्षा–दीक्षा शान्तिनिकेतन और कोलकाता विश्वविद्यालय में हुई। 'कृष्णकली' और चौदह फेरे' इनके लोकप्रिय उपन्यास है।

प्रमुख लेखिका साहित्यकारों का विवरण इस प्रकार है :– ऊषा प्रियवंदा पचपन खम्भे लाल दीवारें, रूकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा (उपन्यास)। ममता कालिया–बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, एक पत्नी के नोट्स (उपन्यास) बोलने वाली औरत, मुखौटा (कहानी संग्रह)। मृदुला गर्ग – उसके हिस्से की धूप, चित्त कोबरा, कठ गुलाब (उपन्यास), कितने कैदी, डिफोडिल जल रहे हैं (कहानी संग्रह)। मेहरून्निसा परवेज– उसका घर, अकेला पलाश (उपन्यास), आदम और हव्वा, लाल गुलाब (कहानी)। मंजुल भगत– अनारो, बेगाने घर में (उपन्यास), लेडीज क्लब, सफेद कौआ (कहानी संग्रह)। मृणाल पाण्डेय– पंढरपुर पुराण (उपन्यास), एक नीच ट्रेजिडी (कहानी संग्रह)। सूर्यबाला– अग्निमंखी, यामिनी कथा (उपन्यास), दिशाहीन मैं, साक्षवाती (कहानी संग्रह)। निरूपमा सोबती–पतझड़ की आवाजें (उपन्यास)। नासिरा शर्मा– कुइयांजान, जीरो रोड (उपन्यास) संगसार (कहानी संग्रह)। मैत्रेयी पुष्पा–बेतवा बहती रही चाक झूला नट (उपन्यास), लाल मिनियाँ (कहानी संग्रह)। चित्रा मुदगल– एक जमीनी अपनी, आवां (उपन्यास), लाक्षाग्रह, अपनी वापसी (कहानी संग्रह)। अल्का सरावगी–शेष कादम्बरी, एक ब्रेक के बाद (उपन्यास), कहानी की तलाश में, दूसरी कहानी (कहानी संग्रह)।

इन सब महिला साहित्यकारों का बारिकी से विश्लेषण किया तो कुछ नये तथ्य उभरकर सामने आते हैं। अब बात विषयवस्तु की आती है। इन्होंने भी यथार्थ और कल्पना के उन्हीं विषयों पर अपनी लेखनी चलायी जिन पर पुरूष लेखक कार्य कर रहे थे। किसी भी विषय वस्तु का यथार्थ या रोमांटिक चित्रण इस बात पर निर्भर नहीं करता कि इसे पुरूष या महिला ने चित्रित किया है, रचना की पूर्णता अंकन पर निर्भर करती है न कि लिंग विशेष पर। अब महत्वपूर्ण बात यह सामने आती है कि काम सम्बन्ध और नारी स्वतंत्रय जैसे विषयों पर पहले जहाँ पुरूष लिखता था अब स्वयं नारी ही उसकी रचना कर रही है। अब नारी की कहानी खुद नारी लिख रही है। मृदुला गर्ग, कृष्ण सोबती, ऊषा प्रियंवाद जैसी लेखिकाओं के काम–निरूपण जिन्दादिली बयान करते हैं। उसमें खुलेपन, मस्ती, आवश्यकता और आधुनिकता सब है। उधर शिक्षा के प्रसार और आर्थिक आत्मनिर्भरता के चलते नारी पुरूष की बराबरी करने लगी। अहं में टकराहट होने लगी। इससे पारिवारिक सामाजिक तानाबाना चरमराने लगा, घरों में क्लेश उत्पन्न होने लगी। इसका प्रभाव बच्चों पर पड़ना लाजिमी था, बच्चे ही नहीं पूरे परिवार पर इस बदनसीसबी का घातक प्रभाव पड़ा और सम्मिलित परिवार बिखरने लगे। परिवार से मुक्त होकर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर नारी पर आधुनिकता और फैशन का भूत सवार हुआ और उपभोक्तावादी संस्कृति की शिकार हो गयी वहां भी वह किसी पुरूष के द्वारा ही छली गई। फर्क इतना था कि वह पति नहीं था और उसकी पुनः घर वापसी हुई। इन सब आधुनिक विसंगतियों का महिला साहित्यकारों ने बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

हिन्दी के कथा साहित्य में पिछले दिनों नर नारी सम्बन्धों की दैहिक भौतिक सम्बन्धों का जांच पड़ताल बड़ी बारीकी से की गई। बदलते सामाजिक आर्थिक नैतिक सम्बन्धों ने स्त्री पुरूष की आदिम राग शक्ति, काम और प्रेम को भी दूषित कर दिया है, नारी भोग की वस्तु बन गई है। मृदुला गर्ग ने 'चित्त कोबरा' में यही स्थिति बड़े बोल्ड बिम्बों में दर्शायी है। सैक्स वर्णन में उनका मन बहुत रमता है और यही हालात बहुत से उपन्यासों में दिखायी देती है।

नारी की मुक्ति कैसे हो ? यह बड़ा गम्भीर मसला है। नारी की आर्थिक सम्पन्नता से उसकी मुक्ति संभव नहीं हो पा रही है, न उसको अधिकार देने से उसकी मुक्ति हो पा रही है, और पुरूष की नकल करने से तो उसकी मुक्ति बिल्कुल भी संभव नहीं है। यथार्थ में यह देखा गया है कि जो महिलायें आर्थिक उपार्जन में लगी हुई है उन्हें दो गुना खपना पड़ता है। एक तरफ ऑफिस में बांस को झेलना पड़ता है, दूसरी तरफ घर में भी खपना ही पड़ता है। एक नौकरी करने वाली महिला ने अपना दर्द इस प्रकार जाहिर किया, ''मैं अपनी लड़की को सिर्फ उतना ही पढाऊँगी, जो वह अपनी गृहस्थी चला सके, उसे नौकरी से दूर रखूँगी, नही तो उसे मेरी तरफ ऑफिस और घर दोनों जगह खपना पड़ेगा।''

आर्थिक रूप से सम्पन्न स्त्री ने क्या किया ? सबसे पहले लेखिकाओं ने पुरूष प्रधान समाज का चित्रण करते हुए नारी की हीन दशा के लिए पुरूषों को दोषी ठहराया और पुरूष मानसिकता को अपनाया। बाद में इस प्रवृत्ति का स्वयं लेखिकाऐं विरोध करने लगी। चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' मे लिखा – 'पुरूष विरोध करते हुए, पुरूष की तरह निरकुंश और स्वच्छन्द हो जाना जारी मुक्ति नहीं है।'' इसी तरह नारी का स्तर भी लगातार आंका जाता रहा है। आर्थिक निर्भरता के बाद भी नारी समानता के लिए संघर्ष ही कर रही है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानी 'बेतवा बहती रही' में नारी का मूल्य इस प्रकार स्थापित किया– विभिन्न मानसिकता वाले दुमुंहे समाज में आज की नारी मात्र वस्तु सम्पत्ति विनियम की चीज है।' नारी को भोग विलास की वस्तु समझना भी लेखिकाओं का विषय रहा है। पुरूष भेड़िये की तरह घात लगाये नारी–नरम चारे को उड़ाने की फिराक में रहते हैं। 'अपनी सलीबें' नामक कहानी में नमिता सिंह कहती हैं – ''यह जिन्दगी तो जैसे अंधेरे घने जंगल से निकलने वाली पगडंडी का नाम है। कब किधर से कोई बाघ या भेड़िया हमला कर दें।''

चाहे जो हो आधुनिक नारी न छायावादी नारी है न मध्यकालीन और न आदिकालीन। अब वह निर्णय लेने में सक्षम है और आगे बढ़ने की अधिकारी है। हमारे संविधान और कानून ने नारी को अधिकार प्रदान किये हैं। उससे उसमें स्वाभिमान जगा है। चित्रा मुदगल के उपन्यास, 'एक जमीन अपनी' की अंकिता, सुधांशु से कहती है –''औरत बोनसाई का पौधा नहीं है, जब भी चाहे उसकी जड़े काटकर उसे वापस गमलों में रोप लिया। वह बोना बनाये रखने की इस साजिश को स्वीकार भी कर सकती है।''

लेखिकाओं ने उपभोक्तावादी दृष्टिकोण दिखाते हुए आधुनिकता से लबालब नारी का चित्रण किया है। नारी पति–पत्नी की बजाय प्रेमी–प्रेमिका के रूप को अपनाना चाहती है। वह पत्नी में बन्धन महसूस करती है, पतिवृत पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं। मातृत्व का निषेध

करती है। ग्लैमर और पश्चात्य की चकाचौंध के बाद ये प्रेमी से छली जाती है। इन लेखिकाओं ने इस जीवन शैली का विरोध किया है। चित्रा मुदगल के अनुसार, ''जब ये अव्यवस्थायें मर्दो के लिए अनैतिक, अमानवीय और निरकुंशताएं है तो स्त्री के लिए कैसे उचित हो सकती है।''

लेखिकाओं ने सिर्फ महिला शक्ति पर ही कलम नहीं चलायी, बल्कि इतर विषयों को भी अपने लेखन का आधार बनाया। मधु कांकरिया ने महानगरों की भाव शून्यता और भागम भाग जिन्दगी से ऊबरकर दूर–दूर की यात्राएँ की और अपने अनुभवों को संकलित कर अपने यात्रा वृतान्तों में शब्दबद्ध किया। 'साना साना हाथ जोड़ि ....' में पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंगतोक से लेकर हिमालय तक की यात्रा का वर्णन किया है। इसमें पीड़ा और सौन्दर्य की अद्भूत मैल है। यात्राओं से मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं अज्ञात स्थलों की जानकारी के साथ–साथ भाषा और संस्कृति का आदान–प्रदान भी होता है। शिवानी ने तांत्रिक, नासिरा शर्मा ने जहाँ फव्वारे जहू रोते हैं, निर्मला जैन ने दिल्ली : शहर दर शहर नाम से यात्रावृतान्त लिखे है।

रेखाचित्र और संस्मरण लिखने में महादेवी वर्मा को अपार सफलता मिली। उन्होंने अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखायें, मेरा परिवार नाम से रेखाचित्र व पथ के साथी नाम से संस्मरण लिखे। 'मेरा परिवार' में उन्होंने अपने पालतू पक्षियों को अपने परिवार का हिस्सा मानकर गिलहरी, मोर जैसे जीवों के साथ करूणा और स्नेह का प्रदर्शन किया है। कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' प्रतिभा अग्रवाल ने 'सृजन का सुख–दुख' नाम संस्मरण लिखे।

राजनीति विषय को आधार बनाकर लिखे गये मन्नू भंडारी के महाभोज को काफी प्रसिद्धि मिली। राजनैतिक यथार्थ यह है कि वोट की राजनीति होती है, सरकार को बनाने के लिए तोड़फोड़ होती है इसके लिए अवसरवादी राजनीति का बोलबाला है। पार्टियाँ धनबल बाहुबल का प्रदर्शन करती हैं। षडयंत्र प्रतिषड्यंत्र करती रहती है और अपनी गोट फिट करती रहती है। इन्हीं हालातों का मन्नू भण्डारी ने दा साहब, बिसेसर, सुकुल बाबू और जोरावर जैसे पात्रों के माध्यम से बड़ा ही सटीक व्यंग्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। आंचलिकता तो नहीं लेकिन सांस्कृतिक सूझ बूझ वाली विभाजन की पूर्व पंजाब की स्थितियों को कृष्ण सोबती ने 'जिन्दगीनामा' में निरूपित किया है।

लेखिकाओं ने आत्मकथा लेखन में विशेष दिलचस्पी दिखायी है। आत्मकथा में स्व का सांगोपांग निरूपण होता है, तो उसका पाठक पर अधिक गहराई के साथ प्रभाव पड़ता है। हिन्दी की पहली महिला आत्मकथा लेखिका जानकी देवी बजाज है। इन्होंने 'मेरी जीवन यात्रा' शीर्षक से अपनी आत्मकथा प्रकाशित करवायी। ममता कलिया ने 'कितनी नावों के कितनी बार' नामक आत्मकथा लिखी जिसे सन् 2012 में सीता पुरूस्कार मिला है। कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं अनन्या', मन्नू भण्डारी की 'कल यह भी' और 'एक कहानी यह भी' आदि हिन्दी लेखिकाओं की प्रमुख बेहतरीन आत्मकथायें है। आत्मकथा लिखना साहब का काम है। अपनी कड़वी सच्चाइयों को व्यक्त करने की हिम्मत अब आज की नारी दिखा रही है। इसी तरह अपने विशिष्ट परिजनों के जीवन को आधार बनाकर लेखिकाओं ने जीवनी भी लिखी। प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचन्द के जीवन पर 'प्रेमचन्द घर में', कमला सांकृत्यायन ने राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर 'महामानव महापंडित', सुलोचना रांगेय ने 'रांगेय राघव : एक अन्तरंग परिचय, गायत्री कमलेश्वर ने 'कमलेश्वर मेरे हम सफर' नाम से अपने प्रिय परिवारीजनों की जीवनियां लिखी। इनसे हमें पात्रों के बारे में विपुल जानकारी प्राप्त होती है। साराशतः कहा जा सकता है कि लेखिकाओं ने नारी विषयक लेखन के साथ ही देश समाज के अन्य विषयों पर भी अपने विचार और विवरण प्रस्तुत किये हैं। यह महिला सशक्तीकरण का ही हिस्सा है और सबसे प्रबल हिस्सा है।

नारी मुक्ति का प्रश्न सिर्फ महिला लेखन तक सीमित नहीं है। यह एक व्यापक संगठन का सवाल है। इसमें महिला हिन्दी लेखन द्वारा नारी मुक्ति के लिए किया जा रहा प्रयास 'नारी द्वारा नारी मुक्ति' प्रशंसनीय है। इससे भले ही बड़े परिवर्तन न हो लेकिन महिला हिन्दी लेखन की प्रशंसा होनी चाहिए। 'अपनी सलीबें' कहानी में नमिता सिंह कहती है प्रबुद्ध नारियों को जागरण का कार्य अवश्य करना चाहिए। भले ही वे समुद्र पर सेतु न बांधे रावण मेघनाथ को न मारे किन्तु ऐसा करने की इच्छा तो व्यक्त करे। यही उसकी मुक्ति है जिसका स्वागत किया जाना चाहिए।

महिला हिन्दी लेखन सिर्फ यथार्थ एवं काल्पिनिक चित्रण ही नहीं कर रहा उस पर बहस करके महिला शक्ति या नारी मुक्ति को दिशा भी प्रदान कर रहा है। सरकार संविधान में महिलाओं की प्रदत्त स्थिति को स्थापित करने के लिए दृढ़ संकल्प है। इसके लिए उसने अन्य कानूनों के अलावा घरेलू हिंसा, महिला आयोग, महिला आरक्षण, बेटी पढ़ाओ बेटी बढ़ाओ योजना, महिला राशनकार्ड, महिला हैल्प लाईन आदि बहुत से नवीन कार्यक्रम लागू किये हैं। जिनसे महिला शक्ति में गुणात्मक परिवर्तन अपेक्षित है। सबसे बड़ी बात महिला शक्ति एक थिंक टैंक क रूप में स्थापित हो रही है। अरूंधतिराय, मेघा पाटेकर, जयललिता, शीला दीक्षित, मायावती जैसी आज बहुत से महिलाएँ, महिलाओं के बारे में अपने अवधारणाएँ विकसित करने में सक्षम है। आगे यही अपेक्षा की जाती है कि यही सब महिला शक्ति समानता और स्वतंत्रता दिलाने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ० नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, डॉ० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी कहानी का इतिहास, डॉ० गोपाल राय, रामजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. आरोह (हिन्दी भाषा) भाग–2 एन.सी.ई. आर.टी., दिल्ली।
5. हिन्दी, डॉ० अशोक तिवारी, साहित्य पब्लिकेशन, आगरा।